‘जनता तक नहीं पहुंचा गांधी का पर्यावरण के प्रति दृष्टिकोण ’

गांधी दृष्टि और पर्यावरण विमर्श' विषयक सेमिनार आयोजित

वक्ताओं ने कहा, गांधी जी ने आजादी के अनेक स्तरों पर किया कार्य

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

नई दिल्ली।

साहित्य अकादमी की ओर से महात्मा गांधी की जयंती पर बुधवार को ‘गांधी दृष्टि और पर्यावरण विमर्श’ विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का उद्‌घाटन वक्तव्य प्रख्यात संस्कृत विद्वान एवं साहित्य अकादमी के महत्तर सदस्य सत्यव्रत शास्त्री ने किया। इस मौके पर प्रख्यात समाजसेवी एवं लेखक आबिद सुरती विशिष्ट अतिथि के रूप उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने की। साहित्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवास राव ने कहा कि भारतीय संस्कृति में प्रकृति के प्रति विशेष आदर भाव रहा है। महाभारत, रामायण और संस्कृत के विभिन्न कालजयी ग्रंथों से उदाहरण देते हुए सत्यव्रत शास्त्री ने कहा कि हमारे सारे आदि ग्रंथ पर्यावरण संरक्षण पर बहुत गहनता और सूक्ष्मता से विचार-विमर्श करते रहे हैं।

हमारे यहां पृथ्वी को माता और वृक्षों को देवता के रूप में पूजा जाता है। पंचतत्वों के साथ ही हमारे पशु-पक्षियों को पूरे [illegible] के [illegible] क [illegible] ल किया जाता रहा है। आबिद सुरती ने उन व्यावहारिक मुश्किलों का जिक्र किया जिसके चलते गांधी का पर्यावरण आदि के प्रति महत्वपूर्ण दृष्टिकोण अब भी सही रूप में आम जनता तक नहीं पहुंच सका है। आबिद सुरती ने कहा कि हम गांधी जी को केवल आजादी दिलाने वाले महापुरुष के रूप में हम ही याद करते रहे जबकि गांधी जी ने आजादी के अनेक स्तरों पर कार्य किया था जिससे हम अभी भी अंजान हैं। इसे सभी को जानने की जरूरत है